B.Ed-ll

Biological Science **Nakul Sah**

Course- 7(b) **Assistant Professor**

Lecture - 10

Aims of teaching Biological Science

जीवविज्ञान शिक्षण के उद्देश्य

जीवविज्ञान शिक्षण के उद्देश्य दो प्रकार के हैं:–

1. **जीवविज्ञान शिक्षण के सामान्य उद्देश्य**
2. **जीवविज्ञान शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य**

1. जीवविज्ञान शिक्षण के सामान्य उद्देश्य :–

(1) अनुशासनात्मक उद्देश्य :–

विज्ञान का दैनिक जीवन में अध्ययन आवश्यक होता है क्योकि इससे नियमितता और विचारों मे क्रमबद्धता आती है। इसके अध्ययन से व्यवस्थित और अनुशासित जीवन यापन का अमूल्य प्रशिक्षण प्राप्त होता है। यह मानसिक अनुशासन ही व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होता है।

(2) व्यावहारिक उद्देश्यः–

प्रतिदिन हमारे उपयोग में आने वाली वस्तुएँ विज्ञान की देन है। विज्ञान शिक्षण के द्वारा बच्चा विज्ञान के सिद्धान्तों को केवल दैनिक जीवन में भी उपयोग कर स्वयं का विकास करें।

(3) व्यावसायिक उद्देश्यः–

भारत की जनसंख्या बहुत अधिक है इसलिए यहाँ बेरोजगारी भयावह स्थिति मे है। इसलिए यहाँ सबके लिए खाना जुटा पाना देश के लिए महत्वपूर्ण समस्या है। ऐसी स्थिति में विज्ञान की शिक्षा हमारे बालकों को न केवल डॉक्टर, इजीनियर, इलेक्ट्रीशियन आदि दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को समुचित ढ़ंग से हल करने की योग्यता प्रदान करेगी।

(4) सांस्कृतिक और नैतिक उद्देश्यः–

आज के समय में विज्ञान अत्यंत प्रभावीशाली है। इसके द्वारा वर्तमान सभ्यता विकसित हुई है। समाज के नागरिक को मनुष्य की उन्नति का ज्ञान तथा वैज्ञानिक नियमों व तथ्यों की सामान्य जानकारी आवश्यक हो तभी ये अपना योगदान समाज को दे सकते है। विज्ञान द्वारा निरीक्षण करने की योग्यता आती है जिससे आत्म विश्वास व आत्म निर्भरता बढ़ती है। विज्ञान के अध्ययन से नये–नये आविष्कारो की जानकारी भी होती है। वैज्ञानिको के बारे में पता लगता है जिससे मानव जीवन समृद्ध हो जाता है।

वैज्ञानिकों की लगन निष्ठा एवं कठोर परिश्रम आदि की जानकारी से हर्ष, उत्साह, त्याग, निष्ठा व परोपकार की भावना जाग्रत हो जाती है और बच्चे का नैतिक विकास होता है।

(2) जीवविज्ञान शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यः–

(1) समस्त विद्यार्थियों को अपने आस–पास के वातावरण पर्यावरण से प्रत्यक्ष रूप से परिचित कराना चाहिए। बच्चा प्रतिदिन अनेक प्रकार के जीव–जन्तु पेड़–पौधे, पशु–पक्षी आदि देखता है। सूर्य, चन्द्रमा, तारे, शुद्ध जल वायु, भोजन सिंचाई तथा स्वास्थ्य का ज्ञान आदि के विषय में भी ज्ञान कराया जाना चाहिए। बालक को अपने स्वयं की शारीरिक रचना तथा क्रियाओं का ज्ञान भी होना चाहिए।

(2) विज्ञान के प्रति रूचि जाग्रत करना :–

आज विज्ञान का युग है। इस समय प्रत्येक कार्य वैज्ञानिक उपकरणों यंत्रों व औजारो के द्वारा हो जाता है। उपकरणों द्वारा जब बच्चे करके देखते है तो उनमें रूचि जाग्रत होती है।

(3) विद्यार्थियों को वैज्ञानिक जानकारी देकर उनके अन्धविश्वास दूर करना :–

प्रतिदिन ब्रहाम्ड में नई–नई घटनाएं होती रहती है जिनके पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक नियम होते हैं। इसके विषय में विद्यार्थियों को जानकारी नही होती है इसलिए वे अंधविश्वासी हो जाते है। बादल कहाँ से आते है ? इन्द्रधनुष आसमान में क्यों दिखाई देता है ? बीज से वृक्ष कैसे बन जाता है ? बोतल के अन्दर बर्फ कैसे चली जाती है। फोन मे आवाज कहाँ से आ जाती है ? पेट्रोल डालने पर गाडी कैसे चलती है? पानी से नहीं। इन सबके कारणों को बालक नहीं जानते और अन्धविश्वासी हो जाते है। इस लिए विद्यार्थियों को विज्ञान के नियम व सिद्धान्त बता देना चाहिए।

(4) विद्यार्थियो में धैर्य स्वाध्याय व आत्म विश्वास की भावना का विकास :–

विद्यार्थियों में आत्म विश्वास व आत्मनिर्भरता विज्ञान विषय के पढ़ने से बढ़ती है। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अन्वेषकों की जीवनियां धैर्य निष्ठा लगन और मनन के साथ पढ़ते हैं जिससे उनमें नैतिकता का विकास होता है।

(5) विद्यार्थियों में वैज्ञानिक ढ़ंग से सोचने की आदत विकसित करना :–

किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पूर्व उस विषय पर गम्भीरता से सोच–विचार कर उसकी उचित जाँच–पड़ताल करना और उसके बाद ही किसी निर्णय पर पहुँचना यह एक वैज्ञानिक विधि है। इसलिए इसकी आदत बालकों में आरम्भ से ही डालना चाहिए।

(6) विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना :–

बच्चों को यह बताना कि प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। बालकों को अंधविश्वासी नहीं होना चाहिए, तथ्यों के आधार पर ही किसी बात को मानना चाहिए एवं नए तथ्यों के आधार पर अपनी मान्यताओं को परिवर्तित करने को तत्पर रहना चाहिए।